सूफी काव्य परंपरा और पद्मावत

डॉ0 कुमार मनीष, अतिथि शिक्षक, हिन्दी विभाग, जी0बी0कॉलेज नवगछिया,
ति0मॉ0भा0वि0भागलपुर-812007

बीज शब्द: सूफी, साहित्य , साधक, प्रेमकाव्य, रूपक काव्य

शोध सार: भक्तिकाव्य को सगु**.k** और निर्गुण काव्यधारा में विभाजित किया गया है| पुनः निर्गुण काव्यधारा को ज्ञानाश्रयी और प्रेमाश्रयी शाखा में विभाजित किया गया है |यह प्रेमगाथा लौकिक प्रेम के द्वारा अलौकिक प्रेम की अभिव्यंजना करता है | यह प्रेम साधक को ईश्वर से मिलाने वाला आध्यात्मिक प्रेम है | सूफी कवियों की साहित्य साधना का लक्ष्य हिन्दू&मुस्लिम एकता **dh** स्थापना है | सूफी काव्य-परंपरा का प्रेम भारतीय मर्यादा के प्रतिकूल स्वछंद प्रेम है |

हिन्दी साहित्य के इतिहास में सूफी काव्य-परंपरा का विकास मध्ययुग में प्रारंभ हुआ है| आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने ^हिंदी साहित्य का इतिहास^ में भक्तिकाव्य को सगु**.k** और निर्गुण काव्यधारा में विभाजित किया है | पुनः निर्गुण काव्यधारा को ज्ञानाश्रयी और प्रेमाश्रयी शाखा में विभाजित किया गया है | इस शाखा में सूफी कवियों के साहित्य को रखा गया है | इस साहित्य में प्रेमगाथा की कल्पित कहानियों के ब्याज से सूफी मार्ग को निरूपित किया गया है | यह प्रेमगाथा लौकिक प्रेम के द्वारा अलौकिक प्रेम की अभिव्यंजना करता है | यह प्रेम साधक को ईश्वर से मिलाने वाला आध्यात्मिक प्रेम है |

आधुनिक शोध से यह प्रमाणित हो गया है कि सूफी कवि मुसलमान के साथ साथ हिन्दू भी थे| उन कवियों ने हिन्दुओं के घरों की कहानियों मैं सूफी **v**ध्यात्म त**Ÿo** का निरूपण कर उसे अमर बना दिया है | इन प्रेमगाथाओं के सृजन द्वारा

मनुष्य के हृदय को स्पर्श कर एकत्व की स्थापना का प्रयत्न हुआ है | इन सूफी कवियों ने मानव-मानव के मध्य भेद-भाव को पाटकर, उनमें प्रेम की स्थापना का स्तुत्य प्रयत्न किया है | उनके साहित्य साधना का लक्ष्य हिन्दू&मुस्लिम एकता **dh** स्थापना है |

मज़े की बात यह है कि सभी सूफ़ी कवियों ने अवधी भाषा में प्रेमकाव्य का सृजन किया है | इसमें मलिक मुहम्मद जायसी कृत 'पद्मावत' को काफ़ी प्रसिद्धि मिली है | 'पद्मावत' के कवि मलिक मुहम्मद जायसी प्रेममार्गी शाखा के प्रतिनिधि कवि हैं और उनका 'पद्मावत' हिंदी साहित्य का अद्भुत रत्न है| आचार्य रामचंद्र शुक्ल 'जायसी ग्रंथावली' के आरंभ में लिखते हैं :

"सौ वर्ष पूर्व कबीरदास हिन्दू और मुसलमान दोनों के कट्टरपन को फटकार चुके थे | पंडितों और मुसलमानों के तो नहीं कह सकते, पर साधारण जनता 'राम और रहीम' की एकता मान चुकी थी |"[1] आगे का कार्य सूफी कवियों द्वारा पूर्ण हुआ | उ**Ugksaus** सांप्रदायिक वैमनस्यता की कुत्सित भावना को दूर कर, आध्यात्मिकता रूपी प्रेम के सेतु द्वारा दोनों सम्प्रदायों को एकता के सूत्र में बांधने का सफल प्रयास किया | अर्थात~ ~ हिन्दुओं और मुसलमानों के हृदय मिल गए | उनमें पारस्परिक एकता और सहिष्णुता के भाव का संचार हुआ |

हिंदी साहित्य के इतिहासकारों ने इस शाखा को विभिन्न नामों से अभिहित किया है | जिसमें प्रेम तत्त्व केंद्र में है | इस सूफी परंपरा का प्रेम भारतीय मर्यादा के प्रतिकूल स्वछंद प्रेम है | जहाँ भारतीय साहित्य में प्रेम समाज की मर्यादा के अनुकूल रहकर किया जाता है | वहीं सूफी काव्य&परंपरा में समाज निरपेक्ष् प्रेम किया जाता है | इस काव्य&परंपरा पर भारतीय काव्य&परंपरा से इतर फारसी काव्य&परंपरा का स्पष्ट प्रभाव परिलक्षित होता है |

हिंदी साहित्य में सूफी प्रेमगाथा परंपरा का प्रारंभ असाइतकृत 'हंसावली (1370ईस्वी) से हुआ है | इसकी कथा इस प्रकार है :
एक राजकुमार स्वप्न में राजकुमारी हंसावली का दर्शन कर मोहित हो जाता है | और उसके प्रेम में विह्वल होकर घर से योगी बन कर निकल पड़ता है | वह भारी संकटों का सामना कर राजकुमारी को प्राप्त करने में सफल हो जाता है | इस प्रेमगाथा में सूफी काव्य की सभी प्रवृfŸk;k¡ परिलक्षित हुई हैं |

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने कुतुबनकृत 'मृगावती' (१५०३ईस्वी) को इस परंपरा का प्रथम महाकाव्य माना है | जबकि आचार्य हजारी प्रसाद f}osnh ने ईस्वरदास की 'सत्यवती कथा' (१५००ईस्वी) को इस परम्परा की प्रथम कृति के रूप में उल्लिखित किया है |

मलिक मुहम्मद जायसी सूफी काव्य धारा के प्रतिनिधि कवि हैं | उनकी प्रसिद्ध कृति 'पद्मावत' **इस परम्परा की प्रौढ़तम रचना है | जायसी ने इस महाकाव्य का सृजन इतिहास और कल्पना के योग द्वारा किया है | इसमें हिन्दू जाति के हृदय को स्पर्श करने वाली मार्मिक कथा का चित्रण है |**

यह महाकाव्य चित्तौरगढ़ के राजकुमार रत्नसेन और सिंहलगढ़ की राजकुमारी पद्मावती की प्रेमकथा पर आधारित है | इसका पूर्वार्द्ध काल्पनिक कथा पर और उत्तरार्ध ऐतिहासिक कथा पर आधारित है | 'पद्मावत' **के पूर्वार्द्ध की कथा अवध क्षेत्र में प्रचलित लोककथा है और उत्तरार्ध की कथा ऐतिहासिक साक्ष्यों पर आधारित है | कवि की प्रतिभा**

और कल्पना शक्ति का पूर्ण प्रदर्शन लौकिक एवं ऐतिहासिक तथ्यों के मिश्रण द्वारा प्रसूत 'पद्मावत' **में दिखाई पड़ता है | आचार्य रामचंद्र शुक्ल 'हिंदी साहित्य का इतिहास' में लिखते हैं कि "इसमें इतिहास और कल्पना dk योग है | चित्तौड़ की महारानी पद्मिनी या पद्मावती का इतिहास हिन्दू हृदय के मर्म को स्पर्श करने वाला है | जायसी ने यद्यपि इतिहास प्रसिद्ध नायक और नायिका ली है | पर उन्होंने अपनी कहानी का रूप वही रखा है जो कल्पना उŸकर्ष द्वारा साधारण जनता के हृदय में प्रतिष्ठत था | इस रूप में इस कहानी का पूर्वार्द्ध तो बिल्कुल कल्पित है और उत्तरार्ध ऐतिहासिक आधार पर है |**

'मृगावती' में चंद्रनगर के राजा गणपति देव के पुत्र और कंचननगर के राजा रूपमुरारी की कन्या मृगावती की प्रेमकथा का वर्णन है |

'मधुमालती' कवि मंझन की रचना है | इसमें कनेसर नगर के राजा सूरजभान के पुत्र मनोहर और महारास नगर की राजकुमारी मधुमालती की प्रेमकथा का चित्रण है | मुल्ला दाऊदकृत 'चंदायन' मे नायक लोर (लोरिक) एवं नायिका चंदा के स्वछंद प्रणय का चित्रण है | यह भारतीय परम्परा का प्रेमकाव्य है | इसकी सभी प्रवृfŸk;k¡ भारतीय प्रेमाख्यान काव्य की **हैं**|

लखमसेन पद्मावती कथा : इसकी रचना दामो या दामोदर कवि ने १४५९ ईस्वी में की थी | इसमें राजा लक्ष्मणसेन एवं राजकुमारी पद्मावती की प्रेमकथा का वर्णन है |

'सत्यवतीकथा' : 'सत्यवतीकथा' के रचयिता ईश्वरदास हैं | इसमें राजकुमारी सत्यवती एवं राजकुमार ऋतुपर्ण की प्रेमकथा का चित्रण हुआ है | इस प्रेम काव्य में सतीत्व की व्यंजना हुई है |

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने कुतुबनकृत 'मृगावती' (१५०३ईस्वी) को इस परंपरा का प्रथम महाकाव्य माना है | जबकि आचार्य हजारी प्रसाद **f}osnh** ने ईस्वरदास की 'सत्यवतीकथा' १५०० ईस्वी को इस परम्परा की प्रथम कृति के रूप में उल्लिखित किया है | मालिक मुहम्मद जायसी कृत 'पद्मावत' में उनके पूर्व की प्रेम गाथा परंपरा का वर्णन है| आचार्य रामचंद्र शुक्ल **'हिंदी साहित्य का इतिहास' की भूमिका में लिखते हैं :**

'जायसी ने प्रेमियों के दृष्टांत देते हुए अपने पूर्व की लिखी कुछ प्रेम कहानियों का उल्लेख किया है :

विक्रम फँसा प्रेम के बारा। सपनावति कहँ गएउ पतारा ॥

मधूपाछ मुगुंधावति लागी। गगनपूर होइगा बैरागी।।

राजकुँवर कंचनपुर गयऊ। मिरगावति कहँ जोगी भयऊ।

साधु कुँवर खंडावत जोगू। मधुमालति कर कीन्ह वियोगू॥
प्रेमावति कहँ सुरसरि साधा। ऊषा लगि अनिरुध बर बाधा ।।

विक्रमादित्य और ऊषा अनिरुद्ध की प्रसिद्ध कथाओं को छोड़ देने से चार प्रेम कहानियाँ जायसी के पूर्व लिखी हुई पाई जाती हैं।'[2]

माधवानंद कामकन्दला: 'माधवानंद कामकन्दला' (१५२७ईस्वी) में नायक माधव एवं नृत्य विशारदा कामकंदला की प्रेमकथा **का** निरूपण अत्यंत रोमांचक शैली में हुआ है |

मधुमालती : मंझन कृत 'मधुमालती' (१५४५ ईस्वी) में कनेसर नगर के राजा सूरजभान के मनोहर एवं महारास नगर की राजकुमारी मधुमालती की प्रेमकथा **का** वर्णन हुआ है | कवि ने महाकाव्य की कथा विस्तार हेतु नायक और नायिका के साथ साथ उपनायक और उपनायिका की भी योजना कर कथा को विस्तृत किया है |

ढोला मारू रा दूहा : कलौल कवि द्वारा रचित 'ढोला मारू रा दूहा ' राजस्थानी प्रेमाख्यान काव्य है| जिसका रचनाकाल श्री नरोत्तम स्वामी अनुसार १३९३ ईस्वी एवं डॉ० मोतीलाल मनेरिया अनुसार १४७३ ईस्वी है | इस काव्य में नरवर देश के राजकुमार ढोला (दूल्हा) और पूंगल राजकुमारी मारवणी के विवाहोत्तर प्रेम और विरह का निरूपण अत्यंत मार्मिक रूप में किया गया है|

चित्रावली : उसमान ने १६१३ ईस्वी में 'चित्रावली' की रचना की थी | इस प्रेम काव्य में सूफी काव्य-परंपरा का पूर्ण पालन हुआ है | इसमें नेपाल के राजा के पुत्र सुजान और रूपनगर की राजकुमारी चित्रावली की प्रेमकथा का निरूपण हुआ है|

पुहकर कवि की रचना 'रसरतन' (१६१८ ईस्वी) में राजकुमारी रम्भा और सोम के प्रेम का निरूपण किया गया है |

'पद्मावत' के पात्र दार्शनिक तत्वों के प्रतीक हैं | इस दृष्टि से इसे रूपक काव्य (allegory) भी कहा जा सकता है | कवि ने 'पद्मावत' के अंत में रूपक में संपूर्ण 'पद्मावत' की कथा के दार्शनिक संकेत दिए हैं |

"तन चितउर, मन राजा कीन्हा | हिय सिंघल, बुधि पदमिनि चीन्हा ||

गुरु सुआ जेइ पंथ देखावा | बिनु गुरु जगत को निर्गुण पावा ||

नागमती यह दुनिया धंधा | बाँचा सोइ न एहि चित बंधा ||

राघव दूत सोई सैतानू | माया अलाउदीं सुलतानू ||

प्रेम कथा एहि भाँति बिचारहु | बूझि लेहु जौ बूझे पारहु ||"[3]

जायसी ने तन को चित्तौरगढ़, मन को राजा रत्नसेन, हृदय को सिंहलगढ़ और बुद्धि को पद्मिनी कहा है | हीरामन सुआ निर्गुण साधना का गुरु है और बिना गुरु के संसार में निर्गुण ब्रह्म की प्राप्ति नहीं होती है | नागमती सांसारिक बंधन है, जो इससे नहीं बँधता है, वह बच जाता है | राघवचेतन शैतान और अलाउद्दीन माया का प्रतीक पात्र है| आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने रत्नसेन को आत्मा का और पद्मावती को परमात्मा का प्रतीक पात्र माना है | इस महाकाव्य की भाषा अवधी है और छ्न्द-योजना दोहा-चौपाई है |

संदर्भ :

1.शुक्ल, आचार्य रामचंद्र, जायसी ग्रंथावली ,प्रथम प्रकाशन, लोकभारती प्रकाशन, अल्लाहाबाद,२००५ , भूमिका , पृ०-1

2.वही, भूमिका , पृ०-3

3.वही, उपसंहार, पृ०-282